सर्व कल्याणकारी थे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

दुनिया में वही लोग महान और पूज्यनीय हैं जो स्व-कल्याण के साथ-साथ दूसरों के कल्याण के लिए जीते हैं। ऐसी महान विभूतियां दीर्घकाल के लिए जीवंत हो जाती हैं। आने वाले समय चक्र में महापुरुषों की स्मृतियां लोगों को सामर्थ्य प्रदान करती हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का जीवन ऐसी ही महान विभूतियों में से एक है। उन्होंने मानवमात्र के कल्याण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था। वे बाल्यकाल से ही सदैव दूसरों की भलाई के लिए एक सच्चे इंसान की भावना से कार्य करते रहे। बाबा के अन्दर सदैव यही इच्छा रहती थी कि एक ऐसा संसार बने जिसमें अपराध और अव्यवस्था का नामोनिशान ना हो।

इन मजबूत इरादों के साथ बाबा ने उस समय माताओं-बहनों को इस कार्य में अग्रणी बनाया जब समाज में महिलाओं की कोई चर्चा तक नहीं थी। उन्होंने अर्थव्यवस्था अथवा सामाजिक एकता भी पहले व्यक्तिगत स्तर को मजबूत करने पर बल दिया। स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का नारा लेकर एक बेहतर एवं स्वर्णिम संसार का विशाल लक्ष्य लेकर रूहानी सेना का गठन किया। अमीर, गरीब तथा ऊंच-नीच के भेद को मिटाकर चरित्र और श्रेष्ठ संस्कारों को स्थापन करने के राज बताये। बाबा सदैव यही कहते कि व्यक्ति जाति से नहीं बल्कि कर्म से महान बनता है। हमारे कर्म ही हमारे व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं। इसलिए उन्होंने दैहिक धर्मों से ऊपर उठते हुए मनुष्य के वास्तविक अस्तित्व का एहसास कराया। जिस सुख और शान्ति की खोज में मनुष्य आज दौड़ रहा है उसकी खोज प्रजापिता ब्रह्मा ने 73 वर्ष पूर्व कर ली थी।

उन्होंने खुले तौर पर लोगों को आगाह किया कि समाज में जो भी समस्यायें पैदा हो रही है। उनकी जड़ हम स्वयं हैं। यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने आंतरिक स्तर को मजबूत करे तथा ईश्वर का सान्निध्य ले तो बेहतर विश्व की परिकल्पना कठिन नहीं है। हमें उन सभी पहलुओं के बारे में सोचना होगा जो संसार में सर्वश्रेष्ठ समझे जाने वाले मानव की परिभाषा को धूमिल करते हैं। उन्होंने मनुष्य के अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार को ही मनुष्य का शत्रु माना। बाबा का व्यक्तित्व विशाल था। जो भी उनके सामने आता उनके दैवी गुणों की आभा में प्रकाशमान हो जाता। आज तक भी उनकी आभा आने वाले लोगों को आलोकित करती रहती है। बाबा यह अच्छी तरह से जानते थे कि यदि इस महान आध्यात्मिक क्रान्ति से विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया को अनवरत जारी रखना है तो इसके लिए स्वयं को बदलने की आवश्यकता है। एक ऐसी धारणा का निर्माण करना है जिसके आधार पर लोग कहने से ज्यादा, देखकर ही महसूस करें। इसलिए बाबा ने परमपिता को सदैव साथी, माता-पिता, दोस्त के रूप में अंगीकार करते हुए स्वयं को मूल्यों और दैवी शक्तियों से भरपूर किया। माताओं-बहनों के छोटे से समूह को लेकर, इन्हीं शक्तियों की बदौलत आगे बढ़ते रहे। माताओं-बहनों के कोमल और नाजुक स्वभाव को समझते हुए उन्हें शक्ति स्वरूपा बनने की प्रेरणा दी। इसके साथ ही लोगों के कल्याण के लिए जीवन को समर्पित करने के लिए प्रेरित किया।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा में अलौकिक जन्म (अर्थात ईश्वरीय जन्म) के पूर्व भी लौकिक व्यापारी के कम परन्तु अलौकिक व्यापार के प्रबल लक्षण थे। जब वे किसी भी व्यक्ति को देखते तो उसे मूल्यों से

परिपूर्ण कर, सच्चा इंसान बनाने की फिकर रहती थी। बाबा अपनी सूक्ष्म दृष्टि से व्यक्ति को संवारने की आंतरिक प्रक्रिया में अनवरत लगे रहते थे। उन्होंने सभी धर्मों, पंथों का सम्मान करते हुए एकता के लिए प्रेरित किया। जाति-पाति तथा अनेक बिडम्बनाओं से पर्दा हटाते हुए एक ऐसे कारवां का शुभारम्भ किया जिसमें भेदभाव नगण्य है। इस कारवां में एक ऐसी ताकत भरी जो स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के लक्ष्य को लेकर बढ़ता जा रहा है। इस कारवां में शामिल लोगों की जिन्दगी ने दूसरों को जीने की प्रेरणा प्रदान की है। यह कारवां एक सुव्यवस्थित तथा सुन्दर परिवार की परिकल्पना को संबल प्रदान करता है।

सन् 1876 में हैदराबाद सिंध (जो अभी पाकिस्तान में है) के धर्म परायण परिवार में जन्मे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के बचपन का नाम दादा लेखराज था। इनकी दूरदर्शिता तथा रहम की भावना के कारण लोग उन्हें प्यार से दादा कहते थे। वे हीरे-जवाहरात के व्यापारी थे। इनका यश भारत सहित कई देशों में फैला था। दादा हीरे जवाहरात के व्यापारी से ज्यादा अपने सौम्य व्यक्तित्व के कारण जाने जाते थे। साठ साल की उम्र में दादा के जीवन में एक महान अलौकिक परिवर्तन आया। कलियुग अंत और सतयुग आदि संगमयुग की बेला में उन्हें ईश्वरीय शक्ति ने पुरानी दुनियां के विनाश और नयी दुनियां की स्थापना का साक्षात्कार कराया। दादा को कुछ समय तक ये सब बातें समझ में नहीं आयी और उन्होंने अपने 12 गुरूओं से पूछा, पर उनके पास भी इसका उत्तर नहीं था। इसके तत्पश्चात स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने अपना परिचय देते हुए उन्हें नयी दुनिया के निर्माण का दायित्व सौंपा और प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के नाम से अलौकिक से नामकरण किया। स्वयं परमात्मा ने इनके साधारण शरीर का उपयोग करते हुए विश्व परिवर्तन की आधारशिला रखी। भारत माता तथा वन्देमातरम को चरितार्थ करते हुए नारी शक्ति को इस कार्य में आगे बढ़ाया।

ओम मंडली के नाम से प्रारम्भ हुई यह संस्था भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद सन् 1950 में राजस्थान के माउण्ट आबू में आयी। यहीं से विश्व परिवर्तन का शंखनाद हुआ। तीन सौ लोगों से प्रारम्भ हुआ यह कारवां पूरे विश्व के 132 देशों में वट वृक्ष की भांति फैल चुका है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, सम्पूर्णता को प्राप्त करते हुए 18 जनवरी,1969 को नश्वर शरीर का त्याग करके फरिश्ता बन सूक्ष्मवतनवासी हो गये। बाबा आज हमारे बीच नहीं परन्तु उनकी सूक्ष्म उपस्थिति से परमपिता परमात्मा शिव का महान कार्य अनवरत जारी है। आज लाखों लोग इस ईश्वरीय कार्य को पहचान अपने जीवन को दिव्य बनाते हुए कार्य में सहयोगी है। बाबा ने विध्वंस के मुहाने पर खड़ी दुनिया में नयी दुनिया की स्थापना के महान कार्य का जो बीज आज से 73 वर्ष पूर्व बोया आज वह विशाल रूप धारण कर चुका है। ऐसी महान विभूति को उनके इस अव्यक्त दिवस पर शत् शत् नमन करते हैं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com